

राधास्यश्रया गृह्या भजत सूर्यः RV. 5, 39, 7. पृथक्पदानि भजेरन् vertheilen LĀTJ. 7, 3, 21. स एव ता (दत्तिणाः) घाददीत भजेरन्सर्व एव वा unter sich vertheilen M. 8, 208. भजेरन्सैत्कं रिक्थम् 9, 104, 124, 136, 192, 200. theilen so v. a. dividiren: भक्ता SŪRJAS. 2, 16. भक्त 1, 67, 2, 31, 3, 9. Journ. of the Am. Or. S. 6, 338, 3. — 2) verleinen, bringen: अर्थ एव हि केषांचिदनर्थं भजते नृणाम् Spr. 3387. एवं मुमन्वानां साक्षाद्यं भजते विधिः KATHAS. 33, 32. — 3) begeben, ausrüsten: त्रिषंधि देवा अंभजतौजसे AV. 11, 10, 11. — 4) als Theil oder Loos empfangen, erhalten; einer Sache theilhaftig werden, sich theilhaben an (acc.; in der älteren Sprache auch gon.); Etwas zu genießen haben, sich einer Sache erfreuen, sich hingeben; med.: अंभजत सुकृत्यया भागं देवेषु यज्ञियम् RV. 1, 20, 8. तव प्रणीती पितरा न ह्येदे देवेषु रत्नमभजत धीराः 91, 1, 123, 4. दत्तिणावतो अमृतं भजते 123, 6. 137, 2. भनीय वो ऽवसा दैव्यस्य 5, 37, 7. भनीमर्हि प्रजामियम् 7, 96, 6. 98, 6. स्वादिरभजत वयसः 8, 48, 1, 7. 88, 3. 9, 86, 12. भजत पितः 10, 13, 3. 94, 8. 107, 2. उर्जं पृथिव्या भक्ताय 109, 7. 133, 1. मन्ये भजानो अमृतस्य तर्हि किरण्यवर्णा अर्तपं यदा वः AV. 3, 13, 6. अंभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम् RV. 3, 33, 12. VS. 3, 20. AV. 12, 1, 23, 3, 4. ÇAT. Br. 9, 3, 2, 9. ÇĀKKH. Br. 10, 6. Gobh. 4, 3, 3. यस्तु मूर्तं भजते यस्मै कृविर्निरूप्यते nem das Lied gehört Nir. 7, 18. PAÑKAV. Br. 7, 6, 13, 14. यत्तान्वः प्रजा भनीष्ट euren Nachkommen sollen die Grenzen gehören Ait. Br. 7, 18. कुशधन्मुते इमे । पत्न्यौ भजेता सकृन्तौ शत्रुघ्नभरतौ erhielten zu Gattinnen R. 1, 72, 11. पित्र्यं वा भजते शीलं मातुर्वामयमेव वा M. 10, 59. स्वं त्रयं कालत्रयं भजे वैश्रवणानुजः nahin seine Gestalt an R. 3, 33, 3. तामसीं भजमानायां योनिं मातरि MĀRK. P. 74, 18. तनुत्राण्यय भजेरि legten die Panzer an MBh. 4, 1009. उत्पलानि च नीलानि भजेरि वारिजां श्रियम् HARIV. 3830. सर्वे भजेरि मनसः सुखम् genossen, empfunden 4940. भजे — अममानोभोगान् KATHAS. 33, 91. तथा सक्त — भजे सुरतसंभोगम् 43, 218. स्वर्गलोका अमनन्तं भजते KATHOP. 1, 13. बहुदोषताम् MBh. 3, 1037. राजनमवम् R. 1, 27, 11. भजत्ये गुरुवर्तिनाम् 2, 113, 19. मूर्खत्वं सुलभं भजस्व Spr. 4733. अलौकिकभावशब्दवाच्यम् SĀH. D. 23, 12. शृङ्गारव्रतताम् 77, 8. अमनसमयो ऽपि मार्दवं भजते RAGH. 8, 43. मौनं भजते रश्नाकलायाः werden still 16, 65. ज्ञानमन्त्रमदाचरिगौरवं भजते गुरुः Spr. 4090. गर्भक्षिणः स्त्रियो मन्ये साफल्यं भजते तदा MĀRK. P. 22, 43. मक्तोयसो हि माहात्म्यं भजमानान् PAÑKĀR. 4, 3, 201. चित्तो परमिकां भजे MBh. 13, 1479. भजे सा मूर्खम् fiel in Ohnmacht MĀRK. P. 21, 23. वाञ्छितासिद्धिर्वदं च भजे KATHAS. 22, 237. न भजेरि भीमविषेण भीतिम् geriethen nicht in Furcht Spr. 2383. विरागं भजते 3011. भजे राजवधूमध्ये बालव्यञ्जनवीजनम् RĀGA-TAR. 3, 386. भजे निद्राम् er genoss des Schlafes KATHAS. 43, 132. In der späteren Sprache auch act.: दिष्टये स्वां प्रकृतिं भजति MBh. 1, 3587. अत्र कनकसिक्तस्यन्तीः — भज निजपुण्यजितोश्च सर्वभागान् PRAB. 104, 18. न भजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम् M. 3, 148. Vid. 338. धूमच्छायामभजतां नेत्रे MBh. 4, 466. व्याक्तिं भजत्यापगाः ÇĀK. 167. नैष भजति निर्वृतिम् KATHAS. 43, 191. अ-भजन्मुदम् 46, 79. दुःखम् PAÑKĀT. 69, 4. भयम् PRAB. 100, 11. भजति खड्गे प्रकम्पं च भजति प्रकम्पमरिवर्गः Spr. 2216. पिकनिकरे भज भावम् Git. 41, 1. जमाम् Spr. 1034. माधुसमागमम् 4142. जामेरत्सवान् RĀGA-TAR. 2, 141. कौटिल्यम् (so ist mit der ed. Calc. zu lesen) 6, 323. — 3) betreiben, ausüben: न विप्रमकायः क्रिया भजेदुज्जीत वा SUGR. 2, 143, 7. यमानतत्यकुर्वणा नियमान्केवलान्भजन् M. 4, 204. ये च चित्रं भजति वै sich mit Mah-

leret beschäftigen R. GORR. 2, 90, 23. सत्यमेव भजेततः Spr. 4673. med.: ये तु कर्मणि यस्मिन्स न्यपुङ्क्तं प्रथमं प्रभुः । स तदेव स्वयं भजे सृजमानः पुनः पुनः ॥ M. 1, 28. भजते तादृशीः क्रीडाः BŪG. P. 10, 33, 37. भजे धर्मम् RAGH. 1, 21. निप्रं विज्ञानाति चिरे शृणोति विज्ञाय चार्थं भजते न कामान् sich daran machen Spr. 3993. — 6) Jmd (acc.) zu Theil werden, treffen: गुणा दश स्नानशीलं भजते Spr. 4017. 4019. 4367. 4636. SUGR. 1, 144, 17. act. R. GORR. 1, 67, 16. नादातारं भजन्त्यर्थाः MBh. 13, 311. नालदमीस्ता-भजिप्यति 3, 3077. 7, 2115. HARIV. 11036. विसर्जनीयानुस्वारौ भजते पूर्व-मन्तरम् gehören zu RV. PRĀT. 18, 18. — 7) sich begeben zu, auf, in: भजे पयो वर्तति पत्यमानः auf des Weges Bahn begab sich wer da konnte RV. 7, 18, 16. भजति अद्री रथ्येव पन्थाम् machten sich auf den Weg 39, 1. भजेरि दीर्घमधानम् HARIV. 3631. न कश्चिद्वर्णानामपयं भजते ÇĀK. 107. अतो नानाविधान् शैलान्काननानि च भजेरि R. 1, 46, 28. दत्तिणां शास्त्रसं-काशमूले भजे शुभानना MBh. 4, 3867. खं भजे 7, 2844 (nach der Lesart der ed. Bomb.). क्षेत्रं तत्रप्रधानपिप्लुनं कैरवं तद्वेद्याः MEGH. 49. सीता च भजतां गुरुम् R. 2, 97, 15. परतं तमसः अधिकमभक्त गुरुः ÇĀK. 9, 19. निकेतानि VĀJU-P. bei MUIR, ST. I. 30, N. 53. को ऽपि तत्पार्श्वं न भजते Hit. 10, 10. Kir. 3, 42. विदेशम् ÇĀK. 9, 48. विसंज्ञा भजेरि दिशः flohen nach allen Richtungen MBh. 3, 11113. R. 2, 103, 42. दिशश्चतस्रो वै भय वि-भज्य MBh. 3, 15607. DRAUP. 3, 6. भजे दिशः Kir. 13, 1. भेजुरनाथा ककुभो दश BHATT. 6, 123. लङ्का तदा भेजुः 14, 113, 6, 72. भजत्यान्तल्यात्तम् Git. 11, 33. भजत्येने kommen heran R. 2, 97, 20. घासनम् sich auf einen Sitz setzen: निर्दिष्टमासनं भजे MBh. 1, 5. HARIV. 7281. भजासनम् 7230. स्वयं भजे नृपासनम् vom Thron Besitz nehmen RĀGA-TAR. 4, 410. शयनम्, शय्याम् sich auf's Ruhebett legen, auf dem Ruhebett liegen: शयनं नैव भजेरि R. 2, 44, 17. नक्तं स भजे शयनोत्तमम् KATHAS. 43, 65. न्ययोधे सुकृतां शय्यां भजेते R. 2, 33, 34. स पुनर्भजे स्ववंशं राज्यकामुकः er kehrte wieder zu seinem Geschlecht zurück BŪG. P. 9, 23, 17. mit dem acc. der Person zu Jmd kommen, hingehen, sich hinbegeben zu, sich wenden an: मां भजधं स्मृतानि R. GORR. 1, 30, 23. भजताशु विप्रम् BŪG. P. 6, 7, 25. पद्मा पद्मा-तपत्रेण भजे साम्राजदीक्षितम् RAGH. 4, 5. दोग्धो भजे 2, 23. सज्जनान्भजन-suchet die Guten auf Spr. 3484. कर्द्वं भजति यज्ञ 3633. कस्माद्भजति क-वयो धनदुर्मदान्धान् 4033. यथा भजेरन् परान्प्रतप्ताः KĀM. NĪRIS. 13, 22. महात्मानो ऽनुगच्छन्ति भजमानाविपूनापि die sich in ihren Schutz begeben Spr. 2146. भक्तं च भजमानं च तवास्मीति वादिनम् MBh. 3, 1037. — 8) sich auswählen, sich entscheiden für, vorziehen: पक्षं भजसि कल्याणि पुमांसं देवसंनिधौ MBh. 3, 2221. भजते पूर्वचोदनम् (adj. nach dem Schol.) 3, 72. सतः परीक्ष्यान्यतरद्भजते Spr. 4339. किं न भजते दीनान्स्वबन्धून्-यम् 1734. सूतो ऽस्मि नरेन्द्र बल्लवो भजस्व (vgl. भरस्व MBh. 3, 2637) मां व्यञ्जकारमुत्तमम् so v. a. nimm mich in Dienst MBh. 4, 237. — 9) Jmd an-gehören, sich zu Jmd hingezogen fühlen, verehren, lieben, Jmd gut sein, mit Jmd der Liebe pflegen: सर्वभूतस्थितं यो मां कृष्णं भजति BŪG. 6, 31, 9, 13. Spr. 1397. PAÑKĀR. 1, 4, 9. BŪG. P. 4, 2, 26. भजते यो माम् कृष्णम् BŪG. 6, 47, 7, 17, 9, 30. PAÑKĀR. 1, 2, 62. BŪG. P. 4, 2, 25. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् BŪG. 4, 11. ग्रामममेव नृपार्तिभजते मनुष्यम् Spr. 404. कश्चित्प्रकृतयः सर्वा भजते वा यथा पुरा MBh. 3, 16063. अतिभीरुम् u. s. w. न भजति नृपं प्रजाः Spr. 3403. PAÑKĀR. 4, 3, 201. वदन्त्या तु भजिष्यामि प्रख्यातं भारतं कुलम् MBh. 1, 3876. मनश्च भद्रं भजतात् liebe das Gute